ORIGINAL RESEARCH PAPER

Defence Studies

भारतीय विदेश नीति के बहुपक्षीय आयाम और चुनौतियाँ

KEY WORDS:

वरुण कुमार लोयर रिसर्च स्कोलर, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

कोविड –19 के बाद जहाँ पूरी दुनिया में स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्तर पर व्यापक बदलाव देखे गए हैं, वहीं हाल में चल रहे रूस–यूक्रेन (फरवरी 2022) युद्ध ने विश्व को परमाणु बम के इस्तेमाल के और करीब पहुँचा दिया है। इस पूरे प्रकरण ने भारत को अपनी विदेश नीति को फिर से मुखर रूप से लागू करने में मदद की है। भारत ने किसी एक पक्ष का साथ न लेकर इसे बातचीत से सुलझाने पर ही जोर दिया है। ये सच है कि भारत ने रूस के खिलाफ सुरक्षा परिषद् में अनुपस्थित रहकर एक तरीके से उसी का साथ दिया है, लेकिन भूतकाल में कई मौकों पर रूस ने भी भारत का साथ दिया था। भारत ने रूस से तेल खरीदे, S–400 सिस्टम खरीदने में अमेरिका का कोई दबाव नहीं माना, जो कि एक निर्भीक, मजबूत और नए भारत की पहचान को बताता है। डोकलाम (जून 2017) और गलवान (जून 2020) संघर्ष के समय भारत ने जिस तरीके से चीन को जवाब दिया, उससे यह तो जाहिर हो गया कि अब भारत को सिर्फ एक शांतिप्रिय देश समझ कर आप उसके हितों से छेडछाड़ नहीं कर सकते। पंचशीलता, गुटनिरपेक्षता, शांतिप्रिय सह–अस्तित्व के साथ–साथ आज का भारत न केवल मुहँतोड़ जवाब देता है (सर्जिकल स्ट्राइक), बल्कि बिना किसी दबाव में आए अपने राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखता है। भारतीय विदेश नीति न केवल अपने पड़ोसी देशों से बल्कि अफ्रीका, यूरोप एवं अन्य छोटे द्वीपीय देशों के साथ संवाद स्थापित करके 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को प्रयत्नरत रहता है। वैश्विक मंचो पर आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, आपसी झगड़ो का बातचीत से हल और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व की धारणा पर बल देता आया है। समय के साथ किसी भी देश की नीतियों में परिवर्तन लाजिमी है। आज का भारत आर्थिक एवं सैन्य रूप से मजबूत है और बहुध्रुवीय सत्ता के केन्द्र का परोकार है।

विशेष शब्द – पंचशीलता, रूस–यूक्रेन युद्ध, शांतिप्रिय एवं सह–अस्तित्व, बहुध्रुवीय सत्ता ।

भूमिका

21वीं सदी का भारत, आज 135 करोड़ लोगों के सपनों को पूरा करने का न केवल मादा रखता है बल्कि वैश्विक स्तर पर लगभग हर मोर्चे पर अपनी उपस्थिति दर्ज करने को तैयार है। आजादी के 75 साल पूरे होने पर पीछे मुडकर देखने से पता चलता है कि भारत के लिए भी ये यात्रा आसान नहीं रही। सपेरों की धरती से मंगलयान तक की यात्रा जरूर आसान नहीं रही है। गरीबी व भूखमरी को बहुत हद तक खत्म करके भारत ने केवल निर्यातक राष्ट्र के रूप में खुद को स्थापित किया बल्कि विश्व की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का तमगा भी हासिल किया है, जो काफी प्र ंसनीय है। इस पूरी यात्रा में भारत की विदेश नीति का प्रभाव भी इसके नीति–निर्माताओं की सोच की प्रतिबिंब है। उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद की नीति का विरोध व शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का विचार आज भी भारत विदेश नीति का मूल है। वैश्विक परिदृ य में रूस–यूक्रेन युद्ध (2022) हो या श्रीलंका का दिवालियापन (मई, 2022) होने का संकट हो या संयुक्त राष्ट्र के 77 वें अधिवेशन में भारत की सुरक्षा परिषद में दावेदारी साफ दिखाई देती है। जिस तरीके से भारत ने बातचीत के जरिए रूस–यूक्रेन टकराव को खत्म करने की अपील की और किसी पक्ष का हिस्सा बनने से मना करते हुए, अपने हितों को प्राथमिकता दी, उससे ये साफ हो गया है कि देश एक नई ऊर्जा व विश्वास के साथ वैश्विक स्तर पर अपनी उपस्थिति को दर्ज करा रहा है, साथ ही अपनी स्वतन्त्र विदेश नीति का अनुसरण भी कर रहा है। कोविड –19 के पचात् पूरी दुनिया में आमूल–चाल परिवर्तन हुए है और भारत उनकी अगुवाई कर रहा है। साथ ही गलवान विवाद के बाद चीन के साथ संबंधो की जोर आजमाइश में जहाँ भारत ने कड़ा रूख अपनाकर अपनी मंशा जाहिर कर दी है। भारत आज भी पंचशील में विश्वास रखता है, लेकिन हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार है।

हमारी विदेश नीति का प्राथमिक एवं प्रमुख लक्ष्य अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित एवं सुदृढ़ रखना है। भारत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय हित का अभिप्राय अपनी क्षेत्रीय अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए सीमाओं को सुरक्षित बनाये रखना, सीमा पार से आतंकवाद पर अंकुश लगाये रखना, राष्ट्रीय सीमा से सटे क्षेत्र के प्रति सतर्कता के साथ ही साइबर सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्यान्न सुरक्षा एंव सामाजिक सुरक्षा आदि भी शामिल है। भारत को अपनी विकास गति को बढ़ाने के लिए तथा बढ़ रही आर्थिक मन्दी पर अंकु ा लगाने के लिए हमें पर्याप्त विदेशी सहायता की भी आवश्यकता होगी। हमारी विभिन्न परियोजनाएँ जैसे – मेक इन इण्डिया, स्किल इण्डिया, स्मार्ट सिटी, स्वच्छ–भारत, डिजिटल इण्डिया तथा इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेन्ट आदि योजनाओं को अमलीजामा पहनाने के लिए भारत को विदेशी देशों से सहयोग, समर्थन, वित्तीय सहायता, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश तथा अति आधुनिक तकनीकों की भी जरूरत है।

"भारत को रूस से कच्चा तेल खरीदने को लेकर नीति में बदलाव की जरूरत है, लेकिन यह बिजली के बटन जैसा नहीं है – अमेरिकी विदेश मंत्रालय" (जून, 2022)

भारत एक संप्रभु देश है और उसे क्या करना चाहिए, ये वो नहीं बताएगी" – लिज ट्रस – भूतपूर्व ब्रिटेन विदेश मंत्री (मार्च, 2022)

"जितना तेल हम महीने में लेते है, उतने की डील यूरोप हर दोपहर करता है" – एस. जयशंकर, भारतीय विदेश मंत्री

उपरोक्त कथन ये बताने के लिए पर्याप्त हैं कि विश्व पटल पर भारत की धमक न केवल बढ़ी है, बल्कि सुपर पॉवर देश अब उस पर दबाव डालकर अपनी बात नहीं मनवा सकते हैं। विश्व की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश अब अपनी नीतियों और उसके परिणामों को लेकर अत्याधिक मुखर है। भूमंडलीकरण के इस दौर में जब पूरा विश्व एक–दूसरे से गहराई से आर्थिक–राजनीतिक रूप से जुड़ा हुआ है, उस दौर में वैश्विक घटनाओं का पूरे विश्व पर असर पड़ना लाजिमी है। वो चाहे रूस–यूक्रेन का युद्ध हो या कोविड –19 या फिर उत्तरी कोरिया के परमाणु परीक्षण, इस पूरे प्ररिपेक्ष्य में भारतीय विदेश नीति ने नए आयाम हासिल किए हैं। भारत ने वैश्विक शक्तियों के साथ–साथ अफ्रीकन देशों व द्वीपीय राष्ट्रों के साथ बहुत सारे बहुपक्षीय समझौतों पर निवेश किया है।

विदेश नीति के बहुपक्षीय आयाम

'इंडिया फर्स्ट' की नीति : स्वतंत्रता के 75 सालो के साथ देश में इंडिया फर्स्ट की विदेश नीति को अभिव्यक्त करने का वृहत आत्म–विश्वास और आशावाद मौजूद है। भारत अपने लिये स्वयं निर्णय लेता है और इसकी स्वतंत्र विदेश नीति किसी भयादोहन या दबाव के अधीन नहीं लाई जा सकती।

यथार्थवादी कूटनीति : आज के आत्मविश्वास से परिपूर्ण भारत के पास वैश्विक फलक पर अपनी नई आवाज है, जिसकी जड़ें घरेलू वास्तविकताओं एवं सभ्यतागत लोकाचार में निहित होने के साथ ही स्वयं के प्रमुख हितों की खोज में गहराई से निहित हैं।

शक्ति संतुलन बनाए रखना : चीन की 'बेल्ट एंड रोड' पहल को वर्ष 2014 में ही चुनौती दे देने वाली एकमात्र वैश्विक भाक्ति होने से लेकर एक मजबूत सैन्य कार्रवाई के साथ चीनी सैन्य आक्रमण का जवाब देने वाले देश के रूप में भारत ने दृढ़ता का परिचय दिया है।

बहु–संरेखित/बहुपक्षीय दृष्टिकोण: चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड) से लेकर ब्रिक्स तक, भारत कई समूहों की सदस्यता रखता है। प्रायः इसे पुरानी भौली की संलग्नता के रूप में देखा जाता है।

हस्तक्षेप और अनुचित हस्तक्षेप : भारत अन्य देशों के आंतरिक मामलों में अनुचित हस्तक्षेप में विश्वास नहीं करता है।

पंचशील: 29 अप्रैल, 1954 को चीन के साथ पंचशील के सिद्धांत को अपनाया गया था, ये पाँच सिद्धांत है – एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिये परस्पर सम्मान, परस्पर गैर–आक्रामकता, परस्पर गैर–हस्तक्षेप, समानता और पारस्परिक लाभ, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व।

वसुधैव कुटुम्बकम् : 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भारतीय दर्शन "सबका साथ सबका विकास, सबका वि वास" की अवधारणा को आधार प्रदान करता है। भारत पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखता है जहाँ इसके सदस्य सद्भाव से रहते हैं, एक साथ कार्य एवं विकास करते हैं और एक दूसरे पर भरोसा करते हैं। सक्रिय और निष्पक्ष सहायता भारत जहाँ भी संभव हो, लोकतंत्र को बढ़ावा देने में संकोच नहीं करता है।

वैश्विक समस्या समाधान दृष्टिकोण : भारत विश्व व्यापार व्यवस्था जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, बौद्धिक संपदा अधिकार, वैश्विक भासन, स्वास्थ्य संबंधी खतरे जैसे वैश्विक आयामों के मुदों पर वैश्विक बहस एवं वैश्विक सहमति की वकालत करता है।

बदलती भारतीय विदेश नीति

- भारत की वर्तमान नीति की सबसे खास विशेशता यह है कि इसमें पूर्व की सभी नीतियों की अपेक्षा जोखिम लेने की प्रवृति सबसे अधिक है।
- भारत अपनी दशकों पुरानी सुरक्षात्मक नीति को बदलते हुए कुछ हद तक आक्रामक नीति की ओर अग्रसर हो रहा है।
- डोकलाम में भारत की कार्यवाही और वर्ष 2018 के पुलवामा आतंकी हमलों के बाद पाकिस्तान के खिलाफ बालाकोट में जोरदार सर्जिकल स्ट्राइक बदलती मजबूत भारतीय नीति का एक प्रमुख उदाहरण है।
- विदेश नीति जानकारो का मानना है कि भारत की वर्तमान विदेश नीति में विचारों और कार्रवाई की एकजुटता दिखाई देती है।

उल्लेखनीय है कि भारत ऐसे भाांति सैन्य अभियानों में ही हिस्सा लेता है जिनमें संयुक्त राष्ट्र श /ति स्थापना बल भागल रहा हो। भारत अन्य देशों के आतंरिक मामलों में हस्तक्षेप करने में वि वास नही रखता, परंतु यदि कोई देश अनजाने में या जानबूझकर भारत के राश्ट्रीय हितों को प्रभावित करता है तो भारत बिना समय बर्बाद किये हस्तक्षेप करने में नहीं झिझकेगा। भारत आकरामणात्मता के स्थान पर निर्यातात्मकता पर जोर देता है। भारत का मानना है कि युद्ध समस्या का हल नहीं बल्कि एक नई समस्या की शुरुआत होता है। धैर्य की नीति को भारत की कमजोरी नहीं माना जाना चाहिए।

वर्तमान में भारतीय विदेश नीति के समक्ष चुनौतिया :

1. रूस–यूक्रेन युद्ध (फरवरी 2022) में भारत का रूस के प्रति झुकाव और उसका सही स्वरूप दुनिया के सामने प्रस्तुत करना ताकि भारत के रक्षा और आर्थिक हितों की सुरक्षा हो सके।

2. श्रीलंका के दिवालियेपन की स्थिति में उसकी आर्थिक मदद के साथ–साथ, विश्व के सामने चीन का भोशणकारी आर्थिक नीतियों को सही रूप से प्रस्तुत करना। चीन की सिल्क रोड़ परियोजना का एक हिस्सा भारत के पाकिस्तान द्वारा कब्जा हुए कश्मीर से गुजरता है।

3. चीन के साथ डोकलाम (जून 2017) और गलवान (जून 2020) झड़प के बाद चीन की दादागिरी का जो जवाब भारत ने दिया है, उसकी तरफदारी वश्वि भर के दशे ो का भारत को इस मुद्दे पर दिए समर्थन से होती है। लेकिन ये खतरे भविश्य में जारी रहेगें, अतः वैश्विक मंचो पर भी भारत को अपक्षा पक्ष दमदार तरीके से रखना चाहिए।

4.अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना की वापसी (अगस्त 2021) के बाद वहाँ तालिबान के कब्जा होने से भारतीय भाांति व अर्थिक प्रयासों को झटका लगा है। भारत को इसमें अमेरिका को यकीन दिलाना होगा कि भारत एक बड़ी शक्ति है, जो अपने हितों की सुरक्षा के साथ–साथ आतंकी गतिविधियों को रोकने में भी मददगार साबित होगा।

5. कश्मीर मुद्दे पर धारा 370 हटने के बाद वहाँ बड़े स्तर पर हो रहे आर्थिक बदलाव व शांति बहाली का सही रूप वै वक मीडिया व मंचो पर रखना क्योंकि पाकिस्तान हर मंच पर कश्मीर राग अलापता है और झूठ बोलकर भारत की छवि को धूमिल करने का हर प्रयास करता है।

6. पाकिस्तान की आंतकपरस्त नीतियों को वैश्विक मंचो पर रखना और उसको अलग–थलक करना है, एफटीएफए की ग्रे लिस्ट में भाामिल और दिवालिया होने की कगार पर पाक हर स्तर पर आंतकी (सेना/आईएसआई/सरकार) गतिविधियों को पोशित करेगा ताकि वो भारत की बढ़ती वैश्विक धाक को इन घटिया चीजो से कम कर सके।

7. संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थायी सदस्यता की पुरजोर कोशिश और कॉफी देशो के विरोध पर उनसे द्विपक्षीय बातचीत से समर्थन हासिल करना चाहिए।

8. भारत ने एसडीजी गोल (2030) में काफी अच्छा काम किया है, खासकर सौर–ऊर्जा क्षेत्र में। 2015 में स्थापित सौर ऊर्जा इंटरने   ानल मंच का उपयोग अपनी सॉफ्ट पावर को और पुख्ता एवं जिम्मेदार राश्ट्र के रूप में प्रयोग करना चाहिए। अफ्रीकी देशों के साथ विशेष रूप से इस क्षेत्र में काम करना चाहिए, ताकि वहाँ चीन के शोषकारी प्रभुत्व को भी कम किया जा सके।

9. क्वाड की सही रणनीति और उस पर गहराई से काम करते हुए अपने विरोधियो के खिलाफ सख्त स्टैंड लेना चाहिए।

10. एनएसजी;1974 में भारत की एंट्री और विभिन्न पाकिस्तान आंतकवादियों को चीन की संयुक्त राष्ट्र में अंडगा लगाने की नीति को भी भारत को प्रमुखता से जवाब देना चाहिए, ताकि पाकिस्तान की तरह चीन का भी दोहरा चरित्र सबके सामने आए।

11. कोविड.19 के बाद भारत की दवाईयों को दुनिया भर में साफ्ट पावर के रूप में प्रचारित करना, जिससे वैश्विक स्तर पर भारत की गरिमा में और भी वृद्धि हो।

भविश्य की डगर

वर्तमान युग में कोई भी राश्ट्र पार्थक्य की नीति अपनाकर अलग रह सके, यह असम्भव है। विदेश नीति ही वैश्विक मंचो पर देश की स्थिति तय करती है। ये सच है कि इसके निर्माण में भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक स्त्रोत, सैनिक शक्ति जैसे तत्वों की प्रधानता रहती है लेकिन राश्ट्र की ध्येयो की पूर्ति करना ही विदेश नीति का प्रमुख लक्ष्य होता है। 2022 के वर्तमान दौर में जहाँ एक तरफ भारत के सामने पाकिस्तान, चीन की चुनौती है, जो बिल्कुल नहीं चाहेगें कि भारत एक वैि वक उभरती भाक्ति बने, वहीं देश के सामने वैि वक मंचो पर भात्रु राश्ट्रों के प्रपंचों का जवाब देने की जरूरत है – चाहे वो धारा 370 के बाद कश्मीर की स्थिति हो या अल्पसंख्यकों की स्थिति। शत्रु राष्ट्र इन्हीं मुद्दों का गलत पक्ष दिखाकर भारत की छवि को खराब करने का षडयंत्र रचते हैं। पि चम के साथ–साथ पूर्वी देशों व खासकर अपने पड़ोसी देशों से भारत के संबंधो की दिशा ही उसकी वैश्विक स्तर पर दशा तय करेगी। चीन–ताइवान, चीन–भारत, चीन की स्ट्रिंग ऑफ पर्ल की नीति, ईरान से तेल की खरीदारी व रूस के साथ द्विपक्षीय व बहुपक्षीय संबधो के अनुरूप ही भारतीय विदेश–नीति को अपने लक्ष्य साधने होगे। एक तरफ बढ़ती अर्थव्यवस्था का इंजन बने भारत देश को अपने साथ अफ्रीकन देशों को भी इस विकास की धारा में अपना सहयोगी बनाना होगा, जिससे न केवल वो चीन को माकूल जवाब दे पाएगा बल्कि वैश्विक मंचो पर भी देश की साख बढेगी। जैसा की विदित है, रूस–यूक्रेन युद्ध के प्रभाव दूरगामी होगे, जिनसे पूरे विश्व में न केवल अस्थिरता बढेगी बल्कि भात्रु राश्ट्र अपने नापाक इरादों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित होंगे। इस के प्ररिपेक्ष्य में चीन–ताइवान मुद्दा एक वैि वक चुनौती बन सकता है। भारतीय विदेश नीति को देश के बड़े डिस्पोरा जोकि यूएसए, ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, इत्यादि में फैला है, उसके हितों कि सुरक्षा की भी जिम्मेदारी है। इसका एक अच्छा उदाहरण मुस्लिम बहुल देश अबुधाबी में मंदिर का बनना है, जो ये बताता है कि सिर्फ धर्म ही किसी राष्ट्र में रहने का आधार नहीं है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में फिर से मंदी आने की संभावना है, जो कि 2008 के लेहमैन ब्रदर्स की घटना के बाद आर्थिक खबर है। यूक्रेन – रूस युद्ध से प्रकट हुए खाद्य संकट व अन्य चीजो जैसे गैस की आपूर्ति (यूरोप) व ताइवान संकट के समय सैमीकडक्टर की कमी से आईटी सैक्टर में आई गिरावट ये बताने के लिए काफी है कि विश्व आज इतना केन्द्रित गाँव बन चुका है, जहाँ विश्व के एक इलाके में हुई घटना का असर पूरे विश्व पर देर–सवेर पड़ना लाजिमी है। कोविड – 19 के बाद चीन की नकारात्मक छवि व भारत की दवा निर्यात नीति से पूरे विश्व में भारत की बढ़ती भाक्ति को प्रदर्शित करने का ही काम किया है। वैश्विक चुनौतियों में जहाँ भारत को सौर–ऊर्जा में अग्रणी माना जा रहा है, क्योंकि भारत ने एसडीजी के अन्तंर्गत अपने सभी लक्ष्यों को पूर्ण करने में बड़े स्तर पर काम किया है, जो वैश्विक मंचो पर उसी छवि को और सुधारने का काम करेगा। भारत अपना पक्ष दमदार तरीके से रख रहा है, जो कि समय की माँग है और इसे इतनी बड़ी मानव पूँजी वाले देश की उमीदों के अनुरूप ही कहा जाएगा।

सन्दर्भ

1. हर्ष वी. पन्त – नये तेवर वाली विदेश नीति – 25 जनवरी 2020, दैनिक जागरण
2. विवक काटजू – पश्चिम एशिया में उबाल – 20 जनवरी 2020, दैनिक जागरण
3. पुष्पेश पन्त, भारत की विदेश नीति – टाटा मैग्राहिल एजूकेशान प्रा॰लि॰, नई दिल्ली (2010)
4. डॉ॰एस॰के॰ मिश्र – सम सामयिक भारत की विदेश नीति, आथर प्रेस नई दिल्ली (2016)
5. डॉ॰ एस॰के॰मिश्र – भारतीय सुरक्षा एवं विदेशनीति – उदय पब्लि ांग हाऊस, नई दिल्ली (2018)
6. धनंजय त्रिपाठी – जंग तो नहीं चाहेगा चीन – 12 जनवरी 2020, राश्ट्रीय सहारा
7. डॉ॰ सतीश सिंह – पड़ोस से रहेंगे बेहतर सम्बन्ध – 10 जनवरी 2020, राश्ट्रीय सहारा
8. प्रमोद जोशी – डिफेन्स मॉनिटर, अगस्त–सितम्बर 2019, नई दिल्ली
9. हिंदुस्तान टाइम्स – 4 सितम्बर, 2020, नई दिल्ली
10. द हिन्दू – 23 मार्च 2022, नई दिल्ली
11. इंडिया टूडे – 23 मार्च 2022, नई दिल्ली
12. प्रैस ट्रस्ट ऑफ इडिया – 20 मार्च 2022, नई दिल्ली
13. द इंडियन एक्सप्रैस – 10 जुलाई 2022, नई दिल्ली